PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Nai Dunia, Delhi
Sun, 04 Jun 2017, Page 6
Width: 32.78 cms, Height: 50.95 cms, a3, Ref: 10.2017-06-04.84

अफरोज की टीम समुद्र से निकाल चुकी है लाखों टन कचरा

वर्सोवा बीच की तर्ज पर गंगा-यमुना को साफ करेगी अफरोज की टीम

मुंबई। ओमप्रकाश तिवारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गत रविवार को 'मन की बात' में जिस शख्सियत का नाम बड़े गर्व से लिया, वह हैं मुंबई के अफरोज शाह। 86 हफ्ते में मुंबई के सबसे गंदे तीन किलोमीटर लंबे वर्सोवा समुद्री तट की सफाई कर डालनेवाले अफरोज का मानना है कि प्रधानमंत्री की सबसे प्रिय गंगा सफाई योजना भी उसी तरह जनभागीदारी से कामयाब हो सकती है, जैसे उन्होंने वर्सोवा बीच की सफाई की है। अफरोज अपने सफाई अभियान को वर्सोवा बीच तक ही सीमित नहीं रहने देना चाहते। मुंबई के सभी 19 समुद्री बीच सहित देश की गंगा-यमुना जैसी प्रमुख नदियां भी उनके एजेंडे में हैं।

अफरोज पेशे से वकील हैं। वर्सोवा बीच की साफ-सुथरी रेत पर खेलकर उनका बचपन गुजरा है। बीच में कुछ वर्षों के लिए बांद्रा के पाली हिल्स में रहने चले गए थे। दो साल पहले जब दोबारा वर्सोवा की एवरेस्ट बिल्डिंग में रहने आए तो खिड़की से समुद्र का हाल देखकर आंखों में आंसू आ गए। गंदगी और दुर्गंध से बुरा हाल था। अफरोज ने उसी समय तय कर लिया कि इसे साफ करना है। जान-पहचान वालों से बात की तो सबने मुंबई महानगरपालिका में शिकायत दर्ज कराने की सलाह दी, क्योंकि मुंबई की सफाई का काम तो उसी का है। अफरोज को यह सलाह पसंद नहीं आई। वह कहते हैं, संविधान में हमारे अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों की बात भी कही गई है। अपने आसपास की जगह को साफ रखना हमारा कर्तव्य है। अफरोज ने यही सोचकर अगले दिन से वर्सोवा में समंदर किनारे की सफाई शुरू कर दी। पहले दिन से उन्हें साथ मिला अपने 84 वर्षीय पड़ोसी हरवंश माथुर का। उनकी देखादेखी कुछ और लोग साथ आने लगे। पास ही स्थित सागर कुटीर झोपड़पट्टी के लोगों से भी बात की। यहां रहने वाले लोगों के लिए बीएमसी ने पास ही 52 शौचालय बना रखे हैं, लेकिन ये इतने गंदे थे कि लोग उनका उपयोग करने की बजाय समुद्र के किनारे ही शौच करने जाते थे। अफरोज ने बिना झिझक बीएमसी कर्मचारियों को साथ लेकर इन शौचालयों को साफ किया। इसके बाद सागर कुटीर के लोग न सिर्फ शौचालय में जाने लगे, बल्कि समुद्री बीच की सफाई में अफरोज का हाथ भी बंटाने लगे। हर शनिवार-रविवार सिर्फ दो-दो घंटे देकर अफरोज की टीम 86 सप्ताह में समुद्र से कई लाख टन कचरा निकाल चुकी है। पिछले साल अक्टूबर में यूनाइटेड नेशंस एनवायरनमेंट प्रोजेक्ट के प्रमुख एरिक सोल्हेम भी एक दिन के लिए न सिर्फ उनके साथ सफाई अभियान में शामिल हुए, बल्कि अफरोज को संयुक्त राष्ट्र संघ के चैंपियंस ऑफ द अर्थ अवॉर्ड से भी नवाजा जा चुका है।

सफाई कार्य में जुटे अफरोज शाह (दाएं)।

अफरोज बताते हैं कि यमुना की सफाई के लिए दिल्ली के कई लोगों के फोन आ रहे हैं लेकिन उनके पास कोई जादू की छड़ी नहीं है। वह सिर्फ अगुआई कर सकते हैं। अपना अनुभव साझा कर सकते हैं। बाकी काम तो स्थानीय लोगों को ही करना पड़ेगा। अफरोज के अनुसार जब हम जनभागीदारी से यह काम शुरू करते हैं तो लोगों की सोच बदलती है। कोई मेहनत कर नदियों या समुद्र से प्लास्टिक या दूसरा कचरा निकालता है, तो उसे तकलीफ का अहसास होता है। वह दोबारा नदी में स्वयं गंदगी नहीं फेंकता। इसलिए गंगा-यमुना एवं अन्य नदियों की सफाई का काम अकेले सरकार नहीं कर सकती, यह लक्ष्य तो जनभागीदारी से ही पूरा किया जा सकता है।